प्रकृति एक धरोहर

डॉ. कंचन जैन 'स्वर्णा'

हर बूंद नीर की पीर,
प्यासा ही जानता है।
और
विडम्बना यह भी है कि मानुष,
पीता कम, फैलाता ज्यादा है।
कदर नहीं होती यहां हरेक को
प्रकृति के वरदान की,
तस्वीर दिखा देती है, प्रकृति अपने रूप विकराल की।
फिर मांगता है,मनुष्य भिक्षा अपने जीवनदान की,
पड़ी रह जाती है धन दौलत हर किरदार की।
देकर प्राण वायु निस्वार्थ भाव से,
ढक लेता है तुम्हें अपनी छांव से ।
काट देते हो, निर्मम होकर वृक्ष के पांव को,
खाते हो तुम,
उसी वृक्ष के फल और सांग को बड़े चाव से।
प्रकृति बिन धन दौलत की अमूल्य धरोहर की वसीयत है,
संभाल कर रख लो यही जीवन के लिए अनमोल नसीहत है।

Scanned with OKEN Scanner